

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि



अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष: 3, अंक: 1

मई 2025



पृथ्वी का भविष्य
किसके भरोसे?



वर्ष : 3 अंक : 1

मई 2025

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम
संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल



मानव ने भौतिक प्रगति के साथ-साथ ऐसी गंभीर समस्याओं को भी आमंत्रण दिया है जिन्होंने पृथ्वी और मानव जाति के लिए भी खतरा उपस्थित कर दिया है। एक तरफ जहाँ विश्व हिंसा, युद्ध और धार्मिक व जातिगत उन्माद से जूझ रहा है, वहीं बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के असीमित दोहन ने हमारे पर्यावरण को खतरे में डाल दिया है। ऐसे माहौल में अणुव्रत का दर्शन हमें संयम का संदेश देता है, जो कि मानवता के लिए कल्याणकारी है।

- बनवारी लाल पुरोहित



अध्यक्ष : प्रतापसिंह दुगड़
महामंत्री : मनोज सिंघवी
कोषाध्यक्ष : राकेश बरड़िया



अणुव्रत विश्व
भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल
उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

किसके भरोसे ?

पृथ्वी पर पर्यावरण का क्रमशः बढ़ता जा रहा असंतुलन अब मात्र चर्चा, सेमिनार, शोध और लेखन का विषय नहीं रहा है। हम इस तपन को अब स्पष्ट महसूस करने लगे हैं - अपने आसपास के वातावरण से और देश-दुनिया में घटित हो रही असामान्य प्राकृतिक घटनाओं से। यह मानवता के लिए तो खतरे की घंटी है ही, सम्पूर्ण प्राणी जगत के अस्तित्व को चुनौती बढ़ती जा रही है।

2015 से 2024 - ये दस वर्ष अब तक के सबसे गर्म वर्षों में शामिल हैं - यह सच्चाई स्थिति की गंभीरता को बयान करती है। अब यह 'क्लाइमेट चेंज' नहीं बल्कि 'क्लाइमेट ब्रेकडाउन' की स्थिति बन गयी है। जिम्मेदार देशों और वैश्विक नेताओं की यही अनदेखी रही तो पेरिस समझौते में निर्धारित 2 डिग्री सेल्सियस की अंतिम लक्ष्मण रेखा भी जल्दी ही पीछे छूट जाये, तो आश्चर्य कैसा ?

तो क्या, दुनिया की 821 करोड़ की आबादी अपने अस्तित्व पर मंडरा रहे खतरे पर भी आँखें मूँद कर इन मुट्ठी भर नेताओं के भरोसे खामोश बैठी रहेगी? या कमान अपने हाथों में लेकर अपने अस्तित्व की लड़ाई को खुद लड़ने का साहस दिखाएगी? यह लड़ाई तभी जीती जा सकेगी जब हर एक इंसान योद्धा के रूप में उठ खड़ा होगा। अपनी क्षमता और अपने हिस्से की जवाबदेही को समझेगा और उसे पूरा करेगा।

संयमित जीवन जीने का व्यक्तिगत प्रयास अणुव्रत दर्शन का ध्येय सूत्र है। संयम में ही पर्यावरण की समस्या का समाधान निहित है। मैं स्वयं अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाऊँगा तभी दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ पाऊँगा - इस जागरुकता के साथ हमें आगे बढ़ते जाना है, बिना रुके, बिना थके!

- संचय जैन

sanchay_avb@yahoo.com

अणुव्रत दर्शन की पृष्ठभूमि

■ आचार्य महाप्रज्ञ

समाज का आधार परस्परावलंबन है। एक दूसरे को सहारा देता है और एक दूसरे से सहारा लेता है, यह परस्परावलंबन है। एक गाँव में हजार आदमी एकत्र हैं, किंतु वे परस्पर सहयोग के धागे में बँधे हुए नहीं हैं तो वे हजार व्यक्ति हैं, एक समाज नहीं हैं। सहयोग के सूत्र में बँधे हुए पाँच व्यक्तियों का भी समाज बन सकता है। व्यक्ति की अंतिम सीमा-रेखा स्वार्थ है और समाज की आदि-रेखा परार्थ है। जितना स्वार्थ है, वह अपना है। जितना परार्थ है, वह सहयोग है। यह सहयोग ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को सामाजिक रूप में बदल देता है।

स्वार्थ-संयम और अध्यात्म

साम्यवाद को स्वार्थ-संयम का विधान-प्रेरित प्रयोग माना जा सकता है। उसमें स्वार्थ-संयम की प्रत्यक्ष प्रेरणा नहीं है, किंतु वैधानिक ढंग से स्वार्थ को सीमित करने से वह (स्वार्थ-संयम) फलित होता है। कानून की पकड़ में भी कुछ न कुछ 'स्व' का पोषण चलता ही है। कानून की जकड़ ढीली हो जाये तो वह अधिक मात्रा में चल सकता है। इसका फलित यही हुआ कि साम्यवादी जीवन पद्धति में भी व्यक्ति अपने 'स्व' को सुरक्षित रखे हुए है।

लोकतंत्रीय जीवन पद्धति में 'स्व' को संरक्षण प्राप्त है। वहाँ कानून की जकड़ कठोर नहीं है, इसलिए वहाँ स्वार्थ-पोषण की संभावनाएं मुक्त हैं। जितनी भी पदार्थवादी पद्धतियां हैं, वे 'स्व' का निरसन करने में असमर्थ हैं। उनका आधार भौतिकता है। भौतिकतावादी व्यवस्था 'स्व' का शोधन नहीं करती, नियमन करती है। फलतः वह प्रत्यक्ष में शांत और परोक्ष में उद्दीप्त रहता है, इसीलिए व्यक्ति छिपे-छिपे

अनैतिक आचरण करता है।

आध्यात्मिकता ही एक ऐसा सत्य है, जिससे 'स्व' का शोधन होता है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अंतर-जगत में प्रवेश। वहाँ पहुँचने पर व्यक्ति सामाजिक होते हुए भी अकेला रहता है। बाह्य जगत का वह

उपयोग करता है, किंतु उसके प्रति उसका 'स्व' या 'ममत्व' नहीं होता। यह ममत्व का विसर्जन ही आध्यात्मिकता है। अणुव्रत आंदोलन की आधार-भित्ति यही है।



आध्यात्मिकता क्यों ?

आर्थिक विकास और व्यवस्था होने पर भी आज का संपन्न मनुष्य उतना ही अर्थ-लोलुप है, जितना पहले था। वैज्ञानिक विकास अपने चरम शिखर पर है, फिर भी आज का विज्ञान-जीवी मनुष्य उतना ही आक्रामक है, जितना पहले था। शिक्षा का स्तर बहुत ऊँचा होने पर भी आज का शिक्षित मनुष्य उतना ही स्वार्थी है, जितना पहले था। क्रोध, अभिमान, कपट, लोभ, भय, शोक, घृणा, कामवासना, कलह - ये मनुष्य की शाश्वत मूल प्रवृत्तियाँ हैं। आर्थिक अभाव तथा अज्ञान के कारण जो सामाजिक दोष उत्पन्न होते हैं, वे आर्थिक और शैक्षणिक विकास से मिट जाते हैं, किंतु मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न होने वाले दोष उनसे नहीं मिटते। मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण या शोधन आध्यात्मिकता से ही हो सकता है, इसलिए समाज में उसका अस्तित्व अनिवार्य है।

आध्यात्मिकता से भले ही समाज का रूप-परिवर्तन न हुआ हो, किन्तु उससे सत्य के प्रति आस्था की सृष्टि हुई है। चरित्र और नैतिकता के प्रति जो आस्था है, वह आध्यात्मिकता का प्रतिफलन है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों लाभान्वित होते हैं।

आध्यात्मिकता से भले ही समाज का रूप-परिवर्तन न हुआ हो, किन्तु उससे सत्य के प्रति आस्था की सृष्टि हुई है। चरित्र और नैतिकता के प्रति जो आस्था है, वह आध्यात्मिकता का प्रतिफलन है। व्यवहार में अध्यात्म का प्रतिपालन जीवन की महान सफलता है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों लाभान्वित होते हैं।

ज्ञान में बहुत विश्वास है और किया जाता है, पर उस ज्ञान में सफलता का विश्वास नहीं किया जा सकता, जो साधना शून्य है। अणुव्रत आंदोलन ज्ञान का आंदोलन नहीं है, यह साधना का आंदोलन है। इसमें ज्ञान की अपेक्षा नहीं है, ऐसा नहीं है, किन्तु इसमें साधना की प्रधानता है। साधना अर्थात् ज्ञान को अभ्यास की आँच में पकाना और उतना पकाना, जिससे जानने और करने के बीच की दूरी मिट जाये। आत्म-चिंतन, ध्यान और मैत्री का अभ्यास यह अणुव्रत की साधना है।

संयम का अर्थ

मनुष्य अपूर्ण है। अपूर्ण इस अर्थ में है कि वह अपेक्षाओं से घिरा हुआ है। उसके शरीर है। इसलिए उसे खाने-पीने की अपेक्षा है। उसके वाणी है, इसलिए उसे समाज की अपेक्षा है। उसके मन है, इसलिए उसे मान-सम्मान एवं पूजा-प्रतिष्ठा की अपेक्षा है। एक मनुष्य, हजारों अपेक्षाएं। वे पूरी होती हैं बाह्य जगत से। वह बाह्य जगत से लेता है और अपने में भरता है। यह आदान उसकी व्यक्तिगत सीमा को तोड़ उसे सामाजिक बना देता है। व्यक्ति यदि निरपेक्ष होता, बाहर से कुछ भी लेना अपेक्षित नहीं होता तो वह व्यक्ति ही होता है, किन्तु ऐसा नहीं है, इसलिए वह व्यक्ति और

सामाजिक दोनों रूपों में अवस्थित है। समाज में अपेक्षाओं की अंतहीन शृंखला है और वही हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का उद्गम हेतु है। पूर्णता की ओर बढ़ने का मार्ग है अपेक्षाओं का संयम। अपेक्षाओं के संयम का अर्थ है हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह का संयम।

संयम का अर्थ है - उस व्यक्तित्व का विकास, जो बाह्य से निरपेक्ष होकर अपने-आप में परिपूर्ण, संतुष्ट और परितृप्त है। संयम का अर्थ है - उस व्यक्तित्व का विनाश, जो बाह्य से अधिक संबद्ध होकर अपने आप में अपूर्ण, असंतुष्ट और अतृप्त रहता है।

निरपेक्षता की स्थिति ध्यान की उत्कृष्ट साधना के द्वारा प्राप्त हो सकती है। अति सापेक्षता की स्थिति ध्यान की साधना से शून्य व्यक्ति में होती है। तीसरी स्थिति ध्यान की मध्यम साधना से प्राप्त हो सकती है। उसमें अपेक्षाएं रहती हैं, पर निरंकुश नहीं। उनकी पूर्ति का प्रयत्न किया जाता है, पर येन-केन-प्रकारेण नहीं। इस संस्कार-धारा में हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह की प्रवृत्ति सीमित हो जाती है। यही 'अणुव्रत' है। परिभाषा की शब्दावली में ध्यान की मध्यम-साधना के द्वारा अपेक्षाओं का परिसीमन और फलतः हिंसा आदि का परिसीमन ही 'अणुव्रत' है।

“झूठ और चोरी से बचें...” अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के उद्गार सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें..



बिना पानी सब सूख

■ रमेश चंद शर्मा, दिल्ली

जल की यात्रा विश्वव्यापी है जो बूँद से शुरू होकर पहाड़, जंगल, मैदान, गाँव-देहात, शहर-नगर होती हुई, जोहड़, तालाब, झील, भू-जल, कुआं, बावड़ी भरते हुए नदियों से मिलकर सागर, समुद्र तक जाती है। वहाँ जाकर भी यह रुकती नहीं है। फिर से भाप, गैस, बादल, वर्षा की बूँदें बनकर अनन्त यात्रा पर निकल पड़ती है।

जब कुछ नहीं था, तब भी बूँद थी। जहाँ देखो, वहाँ बूँद। चारों ओर बूँद का साम्राज्य था। जल ही जल। पानी ही पानी। बूँद में छिपा है जीवन का संचार। जल से जीवन की उत्पत्ति हुई। बूँद से निकला जीवन, जीव फैल गया चहुं दिशा। सभी दिशाओं में हर जगह विविधता के साथ। प्रारंभ हुई विविधता भरी सृष्टि, प्रकृति। पंच महाभूत जल, थल, नभ, हवा, आग से मिलकर। पंचतत्त्वों से रचित यह संसार सात समुद्र पार तक फैल गया। प्रकृति ने करोड़ों वर्षों की साधना से यह सुंदर विश्व हमें सौंपा।

हमारा समाज, देश पानीदार रहा है। तालाब, जोहड़, कुंड, कुएं, बावड़ी, झरने, नदियां जैसे जलस्रोत सहित जल की समझ-पकड़ ने भारत को हरा-भरा, खुशहाल बनाकर रखा। हमारी बस्तियां जल के आसपास बनती गयीं, विशेषकर नदियों के किनारे। जल का साथ पाकर ही वनस्पति, जीव-जंतु, जंगल-पहाड़, नदी-नालों से भरा प्रकृति का निराला स्वरूप साफ, खुशहाल नजर आता है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है।

भारत जल परम्परा की जीवनशैली अपनाने वाला रहा है। समाज का जल से विशेष रिश्ता रहा है। जल एवं जीवन के रिश्ते को समझने के लिए विनोबा भावे ने बताया है कि भोजन देने से पहले मेरी माँ मुझसे पूछती थी - “विन्या!

तूने तुलसी को जल दिया क्या?’ भोजन से पहले तुलसी को जल देना, यह भारतीयता का अंग है।

वर्षा सृष्टि, परमात्मा का आशीर्वाद है। नदियों के जल को ‘शिवतम रस’ यानी अत्यंत शिव-कल्याण कारी, परोपकारी कहा जाता है। स्वच्छ जल को ‘प्रसन्न जलम्’ कहते हैं। संस्कृत में प्रसन्न का अर्थ निर्मल, शुद्ध, साफ है। स्वच्छ जल की पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता के लिए अनेक परम्पराएं, नियम बनाये गये थे। इनमें से आज एक पर भी अमल नहीं हो रहा है। प्रकृति का पंच महाभूतों से गहरा रिश्ता है, आपस में भी पंचभूतों का गहरा रिश्ता है। सूर्य (अग्नि), समुद्र (जल) से भाप बनाता है, वायु (हवा) उसे ऊपर नभ (आकाश) में मेघ के रूप में ले जाती है और फिर मेघ (बादल) वर्षा की बौछार से जमीन (भूमि) पर आशीर्वाद के रूप में जल की बूँदें प्रदान करते हैं।

जल के प्रति श्रद्धा, आस्था, चेतना, प्रेम, सम्मान, समृद्धि का भाव जब तक बना रहा, व्यक्ति, समाज को जल साफ-सुथरा, स्वच्छ, स्वस्थ, शुद्ध, निर्मल, सहजता, सरलता से उपलब्ध रहा। व्यक्ति और समाज पानीदार बना रहा। प्रकृति के साथ की गयी छेड़छाड़ के कारण कभी बाढ़ के रूप में पानी की अधिकता से तो कभी सुखाड़ के रूप में पानी की कमी, अभाव में संकट का कारण बनती है। इसके पीछे हमारी नासमझी, लोभ, लालच, स्वार्थ, शोषण, दोहन, लूट की प्रवृत्ति भी जिम्मेदार है।

जल दुनिया में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, मगर जीवन के संचालन हेतु प्रयोग में लेने के लिए शुद्ध साफ-सुथरा निर्मल जल सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है। ऐसे में जल संरक्षण, संवर्धन, सुरक्षा के साथ-साथ जल की व्यापकता, पवित्रता, समझ, महत्व को दृष्टि में रखना होगा। हमें प्रकृति के साथ सहयोग, सहकार करते हुए प्राकृतिक दृष्टि के साथ प्रकृति प्रेमी बनकर सतत टिकाऊ, सहज-सरल, अपनी सीमाओं में रहते हुए विकास की सही उपयोगितावादी राह पकड़नी चाहिए।



दो मीठे बोल

■ आशीष दशोत्तर, रतलाम ■

साझा सबसे कीजिए, दो मीठे-से बोल।
जीवन में बस आपके, यही रहें अनमोल॥

संयम हमने खो दिया, होने लगे अधीर।
आप धरा को छोड़ के, पा लेंगे प्राचीर?

त्याग, समर्पण भावना इक फोटो में कैद।
सहज, सुगम, सद्भावना, कहाँ गया संवेद?

पल में करुणा भाव का, जागा कोई प्रभाव।
पल में फिर 'मैं' हो गया, बदला नहीं स्वभाव॥

रिश्ते बौने हो गये, ऊँचे हुए मकान।
घर पीछे हटते रहे, आगे बढ़ी दुकान॥

जोड़ें रिश्ता प्रेम का, हर प्राणी के साथ।
ध्येय यही बन्धुत्व का, रहे हाथ में हाथ॥

ये दोहे आशीष के देते हैं यह सीख।
दर्शन, चिंतन, त्याग से बदलें हम तारीख॥

सुनो, माँ गाँव से आई हुई हैं।
उनकी 70 वीं वर्षगाँठ भी आ रही है।
सोच रहा हूँ, वर्षगाँठ ऐसी मनाएँ,
कि उन्हें मन से खुशी हो।



अरे वाह पापा, तब तो हमें दादी को
किसी शानदार होटल में ले जाकर
उन्हें पार्टी देनी चाहिए।
पार्टी के फोटोग्राफ सोशल मीडिया पर
डालेंगे तो खूब लाइक्स आएंगे।



नहीं बेटे, दादी को हम तीर्थस्थल दर्शन के
लिए ले जाएंगे और उनके हाथ से गरीबों को
मिठाई बंटवाएंगे। उन्हें बड़ी खुशी मिलेगी।

वाह, तुमने तो मेरे
मन की बात कह दी!



बेटे, हमें अपने पारिवारिक आयोजनों को
हर आडम्बर से दूर रखना चाहिए।
उसी में सच्ची खुशी छुपी होती है।

समझ गया पापा!



हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें



नो माइंडिडनेस की जापानी अवधारणा

■ रेणु सैनी, दिल्ली

क्या आपके साथ ऐसा होता है कि आप बहुत जल्दी खीझ जाते हैं? किसी बात अथवा कार्य को लेकर अत्यंत चिंतित हो जाते हैं। दूसरों से बहस करते हैं और उत्तेजित होकर अपना सिर दर्द पैदा कर लेते हैं। किसी ने आपको नीचा दिखाने का प्रयास किया और आप दोगुने वेग से उसे गर्त में गिराने को तैयार हो जाते हैं। अगर ऐसा है तो आपको अपने अंदर 'नो माइंडिडनेस' की भावना को जागृत करना होगा। इसे जापानी भाषा में 'मुषिन' कहते हैं।

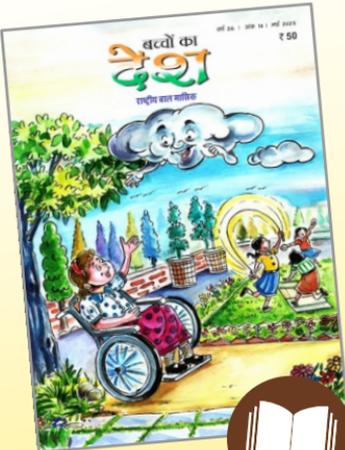
जब व्यक्ति स्थितियों के अनुरूप अपने विचारों, प्रतिक्रियाओं को साधना सीख जाता है तो वह 'नो माइंडिडनेस' अथवा 'मुषिन' की अवस्था में आ जाता है। जब व्यक्ति ध्यान की अवस्था में होता है तो उसके मन में ढेरों विचार आते हैं। इन विचारों को रोकने का प्रयास न करें। इन्हें मन में आने दें और इनके साथ बह जाएं। जब आप इनके साथ स्वयं को बह जाने देंगे तो अंदर से मन शांत हो जाएगा। नकारात्मक विचार अपने आप ही गायब हो जाएंगे। वहीं जब इन विचारों को रोकने का प्रयास किया जाता है तो ये मन में तेजी से उथल-पुथल मचा देते हैं।

जब हमें किसी की बात बुरी लगती है, या किसी पर क्रोध आता है तो उस समय हमारा मन अवसादग्रस्त हो जाता है। हमारे मन में विचारों का बवंडर-सा मच जाता है। कई बार हम बिना सोचे-समझे ऐसे वाक्यांश का प्रयोग कर देते हैं जिससे सामने वाले को चोट पहुँचती है। हम यह सोच ही नहीं पाते कि हो सकता है कि वह भी किसी पीड़ा या दर्द में हो।

जीवन में दिन-प्रतिदिन हमारे साथ अच्छी एवं बुरी घटनाएं घटती हैं। अच्छी घटनाएं जहाँ मन को सुकून और खुशी प्रदान करती हैं, वहीं बुरी घटनाएं हमें तोड़ देती हैं। बुरी घटनाओं के समय यदि हम स्वयं को उनके प्रभाव में आने की अनुमति दे देते हैं तो बड़े संकट को न्यौता दे देते हैं। इसलिए हमें स्वयं को उनके प्रभाव में आने देने से बचना चाहिए। यदि हम ऐसा करने में कामयाब हो जाते हैं तो हम मुषिन यानी नो-माइंडिडनेस की अवस्था में आ जाते हैं।

‘मुषिन’ की अवस्था में आने के लिए प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास करें। आपके मन में अनेक विचार दौड़ते-भागते नजर आएंगे। आप गहरी श्वास लेते-छोड़ते रहें। जब आप पाँच मिनट तक ऐसा कर लेंगे तो पाएंगे कि दौड़ने-भागने वाले विचार धीरे-धीरे शांत हो गये हैं। यदि आप प्रतिदिन ऐसा करते हैं तो ‘नो माइंडिडनेस’ यानी ‘मुषिन’ की अवस्था में स्वयं को कभी भी ला सकते हैं। यकीन मानिए, यदि आप ऐसा कर लेते हैं तो न केवल एक लंबा और स्वस्थ जीवन प्राप्त करते हैं, अपितु असंख्य सकारात्मक लोगों को भी अपने इर्द-गिर्द पाते हैं।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन



नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अब बढ़े हुए पृष्ठों के साथ!
हिन्दी के साथ-साथ अब बच्चों को पढ़ने को मिलेगी अंग्रेजी भाषा में भी कहानियाँ।

संत

■ सुकीर्ति भटनागर, पटियाला

वर्षों पुराने सघन नीम के वृक्ष की छाँव तले स्वामी उदयानन्द जी का प्रवचन चल रहा था। तभी एक सत्संगी ने उनसे पूछा, “स्वामी जी, कृपया संत की परिभाषा को स्पष्ट कीजिए।”

यह सुन स्वामी जी की आँखें दूर सूखते कपड़ों पर टिक गयीं। कुछ क्षण उपरांत वे शांत भाव से बोले, “वत्स, उस तौलिए को देखो जो हर दिन मानव शरीर की मैल को धो-पोंछ कर साफ करता है और धुलने के पश्चात् हवा के झोंकों के साथ मस्त झूलते हुए सहज भाव से तपन भरी गर्मी अथवा कड़कती ठंड के प्रकोप को सहता है। तो यही है संत स्वभाव, बिना किसी आस के दूसरों के लिए जीना और स्थिर मन से हर प्रकार की परिस्थिति को झेलना।”



अणुविभा

जीवन विज्ञान

जीवन विज्ञान भवन, जैन विश्व भारती कैम्पस, लाडजू-341306

+91 91166 34514

jeevan.vigyan@anuvibha.org

www.anuvibha.org

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

प्राथना सभा में
जीवन विज्ञान



घोष बाबू का स्कूल

■ प्रकाश मनु, फरीदाबाद

घोष बाबू सुबह लॉन में टहल रहे होते हैं, तभी मिल्दू आता है घरों का कूड़ा उठाने। एक दिन मिल्दू कूड़ेदान रखकर वापस जाने लगा तो घोष बाबू ने उसे पुकार लिया, “मिल्दू, कुछ काम है तुमसे।”

“कौन-सा काम?” मिल्दू चौंका।

“वह तो बाद में बताऊंगा। पहले बताओ, तुम्हारा यह काम कब तक खत्म हो जाएगा?”

पता चला, बारह-साढ़े बारह बजे तक मिल्दू घरों का कूड़ा उठाता है और उसे शहर के बाहर बड़े कूड़ेदान में डालकर घर पहुँच जाता है। नहाता-धोता है, भोजन करता है और एक बजे फ्री हो जाता है। फिर शाम को पाँच-साढ़े पाँच बजे उसे कहीं और भी काम पर जाना होता है।

“ठीक है, एक बजे के बाद आ जाना।” घोष बाबू ने कहा।

“ठीक है बाबूजी!” कहकर मिल्दू चला गया। दोपहर को वह आया तो नहाया-धोया हुआ, साफ-सुथरा। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास की दीप्ति थी।

“हाँ बाबूजी, बताइए।” उसने गंभीरता से कहा।

घोष बाबू मुस्कराये। बातें चल निकलीं। पता चला कि मिल्दू के पिता नहीं हैं। पाँच साल हुए, वे गुजर गये। मिल्दू तब सात-आठ साल का रहा होगा। तभी से वह कूड़ा उठाने का काम कर रहा है। घर में माँ हैं और एक छोटी बहन है। वे दोनों भी यही काम करती हैं।

“क्या हमेशा यही करते रहोगे? जिस फैक्टरी में मैं काम करता हूँ, उसमें भी तुम्हें काम मिल सकता है। तनख्वाह अच्छी है और काम भी कुछ अलग-सा!”

“सच..?” उसने जैसे अंदर की खुशी छिपाते हुए कहा।

“हाँ, सच... बिल्कुल सच।”

“पर साहब, वह कैसे?”

“तुम्हें उसके लिए पढ़ना होगा।”

सुनकर मिल्दू के चेहरे की खुशी कुछ-कुछ तिरोहित हो गयी। वहाँ अब उलझन नजर आ रही थी।

“तुम कितनी जमात पढ़े हो?” घोष बाबू ने पूछा।

“कक्षा चार बाबूजी। उसके बाद तो पढ़ाई छूट ही गयी!” कहते हुए मिल्दू के चेहरे पर मलाल था।

“तो क्या हुआ? मैं पढ़ाऊँगा।” घोष बाबू ने कहा, “एक साल बाद तुम पाँचवीं का इम्तिहान दे देना। फिर हाईस्कूल तक तो तुम्हें पढ़ना ही चाहिए। हाईस्कूल का इम्तिहान प्राइवेट भी दे सकते हो। काम करते रहो और पढ़ते भी रहो। पढ़ाऊँगा मैं और किताबें भी दूँगा। मेरे पास शाम के समय आ जाया करो। रोजाना दो-ढाई घंटे पढ़ा दिया करूँगा।”

इसके साथ ही वे अंदर से एक सुंदर-सी किताब लेकर आये और बोले, “यह रही तुम्हारी किताब। मैं बोल-बोलकर पढ़ दूँगा, तुम सुनते जाओ। बाद में खुद पढ़ना, अच्छे से समझ में आ जाएगा।”

फिर घोष बाबू ने दो-तीन कविताएँ पढ़कर सुनार्यीं तो मिल्दू का चेहरा खिल गया। इसके बाद मिल्दू रोजाना



उनके घर आने लगा। मन से पढ़ने-लिखने लगा। घोष बाबू जो कुछ पढ़ाते, उसे बहुत जल्दी समझ लेता। याद भी कर लेता। एक दिन घोष बाबू ने मिलदू से कहा, “मिलदू, इस इतवार को मैं तुम्हारे घर आऊँगा।”

मिलदू को यकीन नहीं हो रहा था, पर इतवार आया तो सचमुच घोष बाबू मिलदू के घर जा पहुँचे। वहाँ बिछी चारपाई पर बैठे। मिलदू की माँ से बड़े आदर से मिले। उसकी छोटी बहन रेखा ने चाय बनायी तो चाय भी पी। फिर मिलदू को उसके घर के आगे लगे पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ाया तो देखकर आसपास के और बच्चे भी आ गये। घोष बाबू ने बच्चों को कविताएँ और कहानियाँ सुनार्यीं। क्लास के बाद बच्चों से पूछा, “हाँ भई, कैसा लगा हमारा स्कूल?”

सारे बच्चों का समवेत स्वर, “बहुत अच्छा मास्टरजी।”

“तो यदि हर इतवार को मैं पढ़ाने आऊँ तो आओगे?”

“हाँ मास्टरजी, जरूर आएँगे।” बच्चों का उत्साहित स्वर। इनमें मिलदू की बहन रेखा तथा उसकी कई सहेलियाँ भी थीं। तय हुआ कि घोष बाबू हर इतवार को यहाँ आकर पढ़ाया करेंगे।

इतवार आया तो घोष बाबू और उनकी पत्नी मिताली आ पहुँचे। घोष बाबू के पास लाल रंग का बड़ा थैला था। मिताली मैडम ने उस थैले में से किताबें निकालीं और एक-एक करके बच्चों में बाँटनी शुरू कीं। फिर घोष बाबू ने कुछ

बच्चों के हाथों से किताबें लेकर उनमें से मजेदार कविताएँ-कहानियाँ सुनार्यीं। थोड़ी गिनती और क, ख, ग सिखाया। इसके बाद सबको कॉपियाँ, पेंसिलें और कलर देकर अपने मन से चित्र बनाने के लिए कहा। बच्चों के बनाये चित्रों को देखकर घोष बाबू और मिताली रोमांचित थे।

अगले इतवार को मिताली और घोष बाबू आये तो पहले से कहीं ज्यादा बच्चे उस मैदान में जमा थे। और मिल्दू तो जैसे उन सबका नेता बन गया हो। वह सभी को समझाता, “हम इसी हालत में क्यों रहें? क्या हमें ईश्वर ने कूड़ा उठाने के लिए पैदा किया है? क्या हम बड़े-बड़े काम नहीं कर सकते?”

मिल्दू की बातें सुनकर बस्ती के बच्चों में पढ़ने-लिखने की ललक पैदा हो गयी। मिल्दू दो-तीन महीने में ही खासा पढ़-लिख गया। धीरे-धीरे समय बीता। मिल्दू ने हाईस्कूल की परीक्षा पास कर ली और इंटरमीडिएट में दाखिला ले लिया। घोष बाबू ने उसकी तैयारी कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मिल्दू इस बार फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ। जिस दिन रिजल्ट आया, वह सीधा घोष बाबू के घर गया। घोष बाबू ने उसे छाती से लगा लिया और बोले, “मेरी इच्छा है कि तुम्हारी बस्ती में हम एक स्कूल खोलते हैं। वहाँ कोई फीस नहीं ली जाएगी। वहाँ मुफ्त पढ़ाई होगी, किताबें भी मुफ्त मिलेंगी। और अध्यापक का जिम्मा तुम्हें लेना पड़ेगा। तुम्हारा वेतन मैं दूँगा और स्कूल चलाने का खर्च भी। और हाँ, साथ ही साथ आगे की पढ़ाई भी करते रहो। तुम्हें पढ़ाने का जिम्मा मेरा।”

घोष बाबू और मिल्दू की कोशिशों से जल्द ही वह स्कूल खुल गया, जिसका नाम था - नवप्रभात स्कूल। दो-तीन महीनों में ही स्कूल खूब चल निकला। उसमें घोष बाबू, मिताली और मिल्दू तो पढ़ाते ही। एक-दो और उत्साही अध्यापक आ गये। पढ़ाने के अलावा नाटक होते, कला-संगीत की शिक्षा दी जाती और खेल-कूद भी।

कोई घोष बाबू से उनके बच्चों के बारे में पूछता तो हँसकर कहते, “भाई, हमारे तो यही बच्चे हैं। मेरे बेटे मुक्तेश को किसी चीज की कमी नहीं है। वह अमेरिका में सेटल हो गया है। मैंने वसीयत में लिख दिया है कि मेरे और मिताली के बाद मिल्दू ही हमारी संपत्ति और विरासत का उत्तराधिकारी होगा। स्कूल का प्रबंधन तो वह देखेगा ही। किसी अच्छे काम के लिए हमारी कोठी का इस्तेमाल करेगा, तो हमें खुशी होगी...।”

ऐसे ही बरसों-बरस गुजर गये। नवप्रभात स्कूल की रौनक दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही थी। इन बच्चों में से पढ़कर कुछ तो दूर-दूर चले गये, पर वहाँ से घोष बाबू और मिताली के लिए चिट्ठियाँ आतीं। इन्हें पढ़कर घोष बाबू के चेहरे पर प्यारी मुस्कान आ जाती है। वे कहते हैं - “रोशनी दूर-दूर तक फैल रही है।”

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

निःशुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।



पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।



काव्य-सुधा

अणुव्रत को शिरोधार्य करो

■ विष्णुकांत झा, वैशाली (बिहार) ■

राग-द्वेष, अपना-पराया, मन के ये सब धर्म हैं,
लोभ-मोह, संग्रह-विग्रह, सारे इसी के कर्म हैं।

मन तेरा सेवक सदा, तू हो मन के स्वामी,
सेवक ही मालिक बन बैठा, करते हो गुलामी।

मन की मनमानी सदा, सारे संकट का मूल है,
जीवन में बोता रहता, कंटक पूर्ण बबूल है।



अणुव्रत के अनुष्ठान से, कर जीवन परिवर्तन,
आदि अनंत स्वरूप आत्मा का दिग्दर्शन।

अणुव्रत को शिरोधार्य करो, कर लो अपना उद्धार,
खुद सुधर जब जाओगे, सुधरेगा घर-परिवार।

शुद्ध साध्य प्राप्ति का, अणुव्रत मात्र एक साधन,
सच्चिदानंद में लीन रहे, हो सदा संयममय जीवन।



कौन है जिम्मेदार? स्वयं प्रकृति या फिर मानव?

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

धरती को चढ़ रहा बुखार

बरस रही आग, धधक रहे अंगार
बढ़ रहा तापमान, गर्म हुई बयार।
तप रही इमारतें, मकां दरो-दीवार
तेजी से धरती को चढ़ रहा बुखार।।
भूजल का स्तर लगातार हो रहा कम
पशु-पक्षी तरु-मनु हो प्यास से बेदम।
इधर-उधर भटक रहे तड़पते लाचार
तेजी से धरती को चढ़ रहा बुखार।।
हरियाली को किया नष्ट, धरती हुई तप्त
हरियाली की दवा पिला, करें उस पर उपकार।।
धरती की बीमारी का बस यही उपचार
धीरे-धीरे धरती का तब उतरेगा बुखार।।

- डॉ. इन्दु गुमा, फरीदाबाद

प्रकृति के शत्रु नहीं, सहायत्री बनें

कभी वनों में हरियाली थी, नदियों में निर्मलता थी, मौसम
समय पर आते थे। आज वही धरती कराह रही है, तापमान

बढ़ रहा है, बाढ़, सूखा, भूकंप जैसे प्रकोप आम हो गये हैं। यह मानव की अनियंत्रित महत्वाकांक्षा और उपभोग की भूख का परिणाम है। ऐसे में यह आवश्यक है कि अब प्रश्न है, मैं क्या कर रहा हूँ? मैंने अपने घर की छत पर सोलर पैनल लगाया है, वर्षाजल संचयन करता हूँ, हर साल 50 से अधिक पौधे लगाता हूँ। प्लास्टिक से परहेज करता हूँ। यह मेरा अणुव्रत है। हर नागरिक यह महसूस करे कि वह प्रकृति का शत्रु नहीं, सहयात्री बने।

- डॉ. राजा राम बंसल, फतेहाबाद

जिम्मेदारी लें, समाधान बनें

प्रकृति तो संतुलन चाहती है, लेकिन हमने उसकी गति में हस्तक्षेप किया है। औद्योगीकरण, बेतहाशा शहरीकरण, जंगलों की कटाई, प्लास्टिक और रसायनों का अंधाधुंध उपयोग, कार्बन उत्सर्जन - इन सबने धरती के संतुलन को बिगाड़ा है। अब समय आ गया है कि हर एक व्यक्ति अपनी भूमिका निभाये। जिम्मेदारी ले, समाधान बने।

- डॉ. पी. एम. भारद्वाज, जयपुर

संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग हो

पौधरोपण, जल संरक्षण, ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग, कचरे का सही निस्तारण और वस्तुओं का पुनः उपयोग जैसे छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। हमारी जिम्मेदारी यह है कि हम अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे परिवर्तन से संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर पर्यावरण की सुरक्षा करें।

- डॉ. नीलम जैन, बीकानेर

व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास आवश्यक

मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरणीय संतुलन को बाधित किया है। ग्लोबल वार्मिंग की चुनौती का सामना करने के लिए हमें व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर सक्रिय

होना होगा। यह समय है जब हम अपने कार्यों की जिम्मेदारी लें और एक स्थायी भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाएं।

- डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानन्द व्यास, इन्दौर

छोटे कदमों से खत्म होगा बड़ा संकट

ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए बड़े-बड़े नारे नहीं, छोटे-छोटे ठोस कदम उठाने की जरूरत है। जैसे पराली नहीं जलाना, कचरे का सही तरीके से निष्पादन, पेट्रोलियम उत्पादों पर निर्भरता कम करना, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों पर अधिक निवेश करना आदि। पौधरोपण को जन आंदोलन बनाना होगा। तभी हम और हमारी पृथ्वी सुरक्षित रहेगी।

- नवलेश कुमार, वारिसलीगंज

युद्ध की मानसिकता छोड़नी होगी

यूक्रेन और रूस को युद्ध करते हुए तीन वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन अब भी युद्ध समाप्त होने की कोई संभावना नजर नहीं आती है। इस युद्ध में लाखों टन गोला-बारूद उपयोग किया गया है। इसके अलावा फिलिस्तीन, इजरायल, सीरिया, लेबनान युद्ध में उलझे हुए हैं। वह भी अत्याधुनिक हथियारों से। इससे ईको सिस्टम ही गड़बड़ा गया है।

उद्योगों का गंदा पानी नदियों को प्रदूषित कर रहा है। जलीय जीवों के अस्तित्व को खतरा बढ़ गया है। चिमनियां टनों धुआं उगल रही हैं, उससे वायु प्रदूषण बढ़ा है। परिणामस्वरूप ओजोन परत में बहुत बड़ा छेद हो गया है। अल्ट्रावायलेट किरणें सीधे पृथ्वी पर पहुँच रही हैं। इससे प्राणियों में बीमारियों का प्रकोप बढ़ा है।

युद्ध की मानसिकता का त्याग करते हुए संयम की राह पर अग्रसर होकर ही पर्यावरण को प्राणी के अनुकूल बनाया जा सकता है।

- डॉ. रघुराज सिंह कर्मयोगी, कोटा

बचपन और भविष्य संवारने की जिम्मेदारी किसकी?

गर्मी की लम्बी छुट्टियों के बाद स्कूलों में बच्चों की चहल-पहल फिर शुरू हो जाती है। स्कूल अपने विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम को श्रेष्ठता के सबूत के रूप में प्रचारित करते हैं। अभिभावक भी सामान्यतः बच्चे की रैंक को ही सबसे अधिक महत्व देते हैं।

बच्चे के बौद्धिक विकास के सामने उसके भावनात्मक विकास को हम अक्सर गौण क्यों कर देते हैं? क्या-क्या तरीके और साधन उपलब्ध हैं हमारे पास उनके भावनात्मक विकास के लिए? स्कूल या अभिभावक - कौन लेंगे इसकी जवाबदेही?

क्या आप सहमत हैं कि भावनात्मक विकास से वंचित कोरा बौद्धिक विकास व्यक्ति व समाज दोनों के लिए घातक बनता जा रहा है?

‘अणुव्रत’ पत्रिका के जुलाई 2025 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में 10 जून 2025 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर पर भेजें।



9116634512

ध्यान दें - आपके विचार स्वयं अपने अनुभव व संकल्प से जुड़े हों। अनुभवजन्य उद्गार उपदेशात्मक बातों से अधिक प्रभावी होते हैं। अणुव्रत का दर्शन भी स्वयं से शुरुआत करने का पक्षधर है।



अणुविभा



नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान



अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2025



संविधान की धार
मर्यादाओं का हो आधार

प्रतियोगिताएं

गायन (एकल)
भाषण

गायन (समूह)
कविता

चित्रकला
निबंध

राष्ट्रीय विजेताओं को
आकर्षक पुरस्कार

समूह-1 : कक्षा 5-8 ■ समूह-2 : कक्षा 9-12

चार स्तर स्कूल ■ जिला ■ राज्य ■ राष्ट्रीय प्रारूप ऑफलाइन

सकलित

18+

राज्य

220+

शहर/कस्बे

1
लाख
बच्चे

Please contact for more details

9116634514 www.anuvibha.org anuvratc25@gmail.com

आयोजक.....
अणुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी



अणुव्रत सभाचार



जुम्मा मस्जिद में अणुव्रत अनुशास्ता ने दिया नैतिकता, अहिंसा और सद्भाव का संदेश

वाव-थराद। नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति के संदेश के साथ जनमानस में नैतिक मूल्यों के उन्नयन का महनीय कार्य कर रहे अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण मुस्लिम समाज के अनुरोध को स्वीकार कर 21 अप्रैल को वाव की जुम्मा मस्जिद में पधारे। वहाँ मुस्लिम समाज ने अणुव्रत अनुशास्ता का भावभीना स्वागत किया। सांप्रदायिक सौहार्द का यह क्षण हर दिल में चिरस्मरणीय बन गया।

आचार्य प्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में जैन साधुचर्या की जानकारी प्रदान करते हुए अहिंसा, सत्य, नैतिकता आदि सत्संस्कारों की प्रेरणा दी। उल्लसित मुस्लिम समुदाय के लोगों ने आचार्यश्री के संदेशों का समर्थन करते हुए कहा कि हमारे मजहब में भी ये ही बातें बतायी गयी हैं। आपसे मिली प्रेरणा हमारे भीतर उन बातों को पुष्ट करेंगी। इसके पश्चात् वर्धमान समवसरण में मुख्य प्रवचन में

आचार्य प्रवर ने कहा कि जीवन में बुद्धि, शुद्धि व शक्ति - इन तीनों का बड़ा महत्व है। व्यक्ति को इन तीनों का सदुपयोग करना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति समस्याओं का समाधान भी खोज सकता है। बुद्धि का मिलना भी एक विशेष बात है, किन्तु उसका सदुपयोग करना चाहिए। बुद्धि का कभी दुरुपयोग न हो, यह आवश्यक है। अणुव्रत अनुशास्ता ने एक कथा के माध्यम से प्रेरणा देते हुए कहा कि अपनी बुद्धि का प्रयोग कर व्यक्ति दूसरों को भी अच्छी सीख दे सकता है, सही दिशा दिखा सकता है।

मुख्यमुनि श्री महावीर कुमार ने मन, वचन एवं काया को सत्प्रवृत्ति में नियोजित करने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा ने गुरु की महत्ता बताते हुए सारगर्भित उद्बोधन प्रदान किया। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा ने गीत के माध्यम से आत्मरमण करने की प्रेरणा प्रदान की।





अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025 के बैनर का विमोचन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025 के बैनर का विमोचन अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ की अध्यक्षता में हुआ। इस दौरान अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री मनोज सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष संचय जैन सहित गणमान्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

उप मुख्यमंत्री व विधायक को अणुव्रत साहित्य भेंट

राजसमंद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी मुख्यालय परिसर में 27 मार्च को राजस्थान के उप मुख्यमंत्री प्रेमचन्द बैरवा तथा राजसमन्द विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी का आगमन हुआ। संस्था के सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया ने उपरणा ओढ़ाकर दोनों का स्वागत किया तथा अणुव्रत साहित्य भेंट किया।





अणुव्रत संसदीय मंच की संगोष्ठी में शामिल हुए अनेक सांसद

दिल्ली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में अणुव्रत संसदीय मंच की संगोष्ठी का आयोजन 3 अप्रैल को कामराज मार्ग में हुआ। डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार एवं मुनिश्री जागृत कुमार के सान्निध्य में आयोजित 'वैश्विक समस्याओं का समाधायक अणुव्रत' विषयक सांसद संगोष्ठी में मुनिद्वय का प्रेरणा पाथेय प्रेरक और प्रभावशाली रहा। इसमें शामिल सांसदों प्रतापचन्द्र सारंगी, आलोक शर्मा, डी. के. अरुणा, घनेश्वर राव पाटिल, रमेशचन्द्र जागरा, राजकुमार संगवान, टी. कृष्ण प्रसाद तथा पूर्व सांसद राजेन्द्र अग्रवाल ने अपने संसदीय क्षेत्रों में अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों के आयोजन में सहयोग का आश्वासन दिया। केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री एवं अणुव्रत संसदीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनराम मेघवाल ने अणुव्रत संसदीय मंच के विजन और मिशन को साझा किया।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने स्वागत स्वरों के साथ अणुव्रत की बात प्रस्तुत की। उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने संगोष्ठी का संचालन किया। संगोष्ठी में अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, तेरापंथ कल्याण परिषद् के संयोजक के. सी. जैन, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया आदि की उपस्थिति रही। सांसदों का अणुव्रत पटका से सम्मान किया गया एवं अणुव्रत सामग्री सहित किट प्रदान की गयी।



देश भर में जारी अणुव्रत संगठन यात्रा

महामंत्री मनोज सिंघवी की रिपोर्ट

अणुविभा के वरिष्ठ पदाधिकारी समय-समय पर संगठन यात्रा के माध्यम से विभिन्न अणुव्रत समितियों से रू-ब-रू होते हैं तथा उनमें उत्साह का संचार करते हैं। इसी कड़ी में अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ सहित अन्य पदाधिकारियों ने पिछले दिनों दिल्ली, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और असम का दौरा किया तथा संगठन को सुदृढ़ और गतिशील बनाने व अणुव्रत आंदोलन को आमजन तक ले जाने का आह्वान किया। इस दौरान आयोजित कार्यक्रमों में अणुविभा के केन्द्रीय पदाधिकारी तथा संबंधित अणुव्रत समितियों के पदाधिकारी तथा अणुव्रत कार्यकर्ता शामिल हुए।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने 2 और 3 अप्रैल को दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रवास किया और अणुव्रत के कार्य को गति प्रदान करने की दृष्टि से अनेक बैठकें कीं। संस्था के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, निवर्तमान महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया, सहमंत्री सुरेन्द्र नाहटा, परामर्शक शान्तिलाल पटावरी, राज्य प्रभारी राजन जैन सहित वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की संगठन यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

संगठन यात्रा के दिल्ली पहुँचने पर अणुव्रत भवन में डॉ. मुनिश्री अभिजीत कुमार और मुनिश्री जागृत कुमार के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय पदाधिकारियों का अणुव्रत समिति दिल्ली के प्रतिनिधियों ने स्वागत



किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि अणुव्रत वर्तमान युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मानव सेवा के इस अभियान में हम सब को साथ मिलकर ठोस काम करना है। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने गाजियाबाद, नोएडा तथा फरीदाबाद अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी हिस्सा लिया तथा आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किये।

अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महामंत्री मनोज सिंघवी, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, महाराष्ट्र राज्य प्रभारी रोशन मेहता तथा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट की महाराष्ट्र प्रभारी कंचन सोनी ने 1 अप्रैल को मुंबई की संगठन यात्रा की। वहीं, वापी, रिछेड़, उमरगांव और सिलवासा में आयोजित कार्यक्रमों की अध्यक्षता अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी ने की तथा अणुव्रत आंदोलन को जन-जन के बीच ले जाने की अपील की।

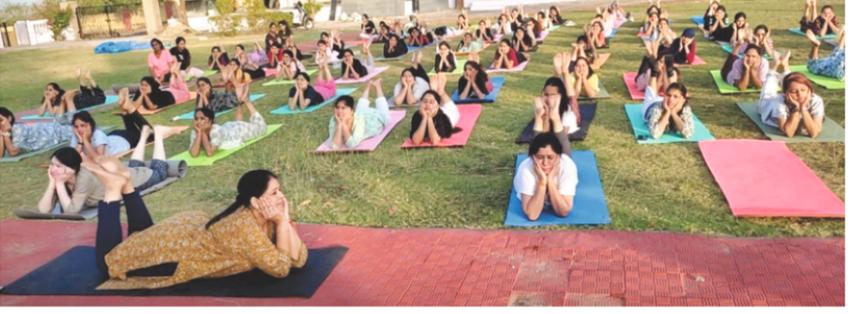
अणुविभा के राज्य प्रभारी छत्तर सिंह चौरड़िया ने अणुव्रत समिति खारूपेटिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता की। अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया और बालोदय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने भीलवाड़ा अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया तथा महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये।

झाबुआ की समस्त अणुव्रत समितियों की सामूहिक संगठन यात्रा झाबुआ में आयोजित हुई। अणुविभा की संगठन मंत्री साधना कोठारी ने अणुविभा के प्रकल्पों की जानकारी देते हुए इनमें सहभागिता निभाने की अपील की।



अणुव्रत आने वाले कल के विश्व का आधार संयोजक जिनेन्द्र कोठारी की रिपोर्ट

अहमदाबाद। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी और गुजरात विश्व कोष ट्रस्ट के तत्वावधान में 30 मार्च को 'अणुव्रत आने वाले कल के विश्व का आधार' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार ने अणुव्रत को जीवन जीने की सच्ची कला से उपमित करते हुए अणुव्रत आचार संहिता की व्याख्या की। डॉ. मुनिश्री मदन कुमार ने अणुव्रत को शांति का संदेश बताते हुए आह्वान किया कि अणुव्रत को जन-जन तक फैलाने का प्रयास होना चाहिए। अणुव्रत लेखक पुरस्कार से अलंकृत पद्मश्री कुमारपाल भाई देसाई ने कहा कि अणुव्रत संयममय आदर्श समाज की राह बताता है। अहमदाबाद की महापौर प्रतिभा जैन ने अणुव्रत को मानव कल्याण का मार्ग बताया। गुजरात सरकार के पूर्व मुख्य सचिव तथा सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी पी. के. लहरी तथा राजस्थान सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य विभाग में एडिशनल कमिश्नर राजेंद्र सेठिया ने भी विचार रखे। अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जिनेन्द्र कुमार कोठारी ने लेखक मंच का परिचय प्रस्तुत किया। अणुव्रत समिति अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रकाश धींग ने अणुव्रत दर्शन पर उद्बोधन दिया। नरेंद्र जैन ने परिसंवाद की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक संतोष सुराणा ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्यकार और बुद्धिजीवी उपस्थित थे।



‘अणुविभा’ मुख्यालय बना भावी शिक्षिकाओं का अनूठा प्रशिक्षण स्थल

संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया की रिपोर्ट

राजसमंद। प्रकृति और पर्यावरण की चेतना से संस्कारित जीवनशैली और तदनुरूप विद्यालयों में सीखने-सिखाने की परिस्थितियों की अनूठी प्रक्रिया से छात्राध्यापिकाओं को परिचित कराने हेतु गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर के शिक्षा संकाय के बी. एड. प्रथम वर्ष की 80 छात्राध्यापिकाएं और 10 व्याख्याताओं के दल के तीन दिवसीय वनशाला शिविर का आयोजन अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी मुख्यालय में सम्पन्न हुआ।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के वैश्विक दर्शन अणुव्रत को सविस्तार समझने तथा आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ व आचार्य श्री महाश्रमण की शिक्षाओं पर आधारित आचार व आचरण के क्षेत्र में छोटे-छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन का संदेश शिविरार्थियों को बहुत भाया। सभी ने शिक्षा में इसकी अनिवार्यता को अपने शिक्षण का आधार बनाने का संकल्प लिया। तीन दिनों तक चले शिविर में अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने छात्राध्यापिकाओं को अणुव्रत दर्शन के बारे में बताया, वहीं बालोदय कार्यक्रमों की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने योगाभ्यास करवाया। शिविर में अणुविभा के सह मंत्री जगजीवनलाल चौरड़िया एवं स्कूल विद् ए डिफरेन्स के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राकेश तैलंग का सतत सहयोग रहा।



अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट का जनाभिनंदन

राजसमंद। गांधी सेवा सदन के मंत्री, समाजसेवी, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट की 45 वर्षीय सामाजिक एवं शिक्षा सेवाओं के सम्मान में जनाभिनंदन समारोह का आयोजन 23 मार्च को किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत की दीपशिखा को निर्धूम जलाये रखते हुए लोक-मंगल के पथ को अनवरत अपनी कर्म साधना से प्रशस्त किया है।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि डॉ. महेन्द्र कर्णावट अणुव्रत आंदोलन के जमीनी कार्यकर्ता और अणुव्रत इतिहास के गहरे अध्येता हैं। इस अवसर पर अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा, निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर, पूर्व अध्यक्ष संचय जैन, महामंत्री मनोज सिंघवी, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, डॉ. कुसुम लुनिया, डॉ. विमल कावड़िया, सहमंत्री सुरेन्द्र नाहटा, बालोदय की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया, स्कूल विद् ए डिफरेन्स के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राकेश तैलंग, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती व अशोक इंगरवाल तथा 'बच्चों का देश पत्रिका' के सह संपादक प्रकाश तातेड़ भी उपस्थित थे। अध्यक्षीय उद्बोधन में विजयराज सुराणा ने कहा कि महेन्द्रभाई ने जो महनीय सेवाएं समाज-अणुव्रत में दी हैं, वे अवर्णनीय हैं। डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने गुरुओं, पूर्वजों को प्रणाम निवेदित करते हुए स्नेहीजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..





अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन



'अणुव्रत'

पत्रिका

प्रकाशन के 70 वर्ष

विशेष
छूट
योजना

'बच्चों का देश'

पत्रिका

प्रकाशन के 25 वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िये

अवधि

1 वर्ष

अणुव्रत

₹ 800

बच्चों का देश

₹ 500

3 वर्ष

₹ 2200

₹ 1350

5 वर्ष

₹ 3500

₹ 2100

15 वर्ष (योगक्षेमी)

₹ 21000

₹ 15000

बैंक विवरण

ANUVRAT VISHVA
BHARATI SOCIETY
IDBI BANK
Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

■ संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328

■ कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100